B.A.(Education),part-I,Paper-II,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का विकास, चार्टर एक्ट (Growth of Mordern System of Education, Charter Act)

6.1 परिचय (Introduction):

भारत में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के विकास की एक लम्बी कहानी है। इसमें मिशनरी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के मध्य में थोड़ी-बहुत अँगरेजी शिक्षा के प्रसार ने भारतीय रूढिवादी समाज को झकझोर दिया था । इस क्षेत्र में भारतीय समाज सुधार आंदोलन की भूमिका भी सराहनीय रही। इस अध्याय में हम भारत में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के विकास, लार्ड मैकाले का प्रतिवेदन एवं एडम्स रिपोर्ट के बारे में जानने का प्रयास करेंगे।

6.2 भारत में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का विकास (Growth of Modern System of Education in India):

भारत में अंग्रेजी तथा विदेशी शिक्षा का प्रादुर्भाव ईसाई मिशनरियों के क्रियाकलापों द्वारा संभव हुआ। भारत में सबसे पहले आनेवालों में रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के मिशनरी थे। यूरोप में बदलती परिस्थितियों से पलायन करके वे धर्म के नये साम्राज्य की स्थापना करने के लिए यूरोप से बाहर को धरती पर गये। नयी धरती की खोज में यूरोप के यात्री, भारत, अफ्रीका, अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया जैसे अज्ञात स्थानों की खोज कर पाये।

भारत में पुर्तगालियों के साथ-साथ फ्रेंच, डच आदि ने भी कदम बढ़ाये । इन देशों में सर्वाधिक वर्चस्व अंग्रेजों ने प्राप्त किया, ये व्यापारी के रूप में आये। इन्होने कम्पनियाँ बनायो, व्यापारिक स्पर्धा के कारण इनमें आपसी संघर्ष भी होते थे। स्थानीय शासकों से व्यापारिक लाभ लेने की ललक इनमें थी। समय के साथ-साथ इन कम्पनियों के मालिकों ने यहाँ के शासकों की कमजोरी को भापा और उसके अनुसार लाभ उठाना आरम्भ किया। कम्पनी के सामने दो समस्यायें थीं जो भारत में विदेशी शिक्षा के लिए उत्तरदायी थी--

(1) भारत में लोगों के साथ यहाँ की भाषा में व्यवहार,
(2) कम्पनी के परिवारों के बालकों की उन्हों की भाषा में शिक्षा, एक तीसरा विकल्प भी उभर
रहा था। वहाँ था भारत में ईसाइयत का प्रचार। ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के आवश्यक था कि इस देश की भाषा में धर्म का प्रचार किया जाये।

भारत में जैसे ही पुर्तगालियों ने अपने चरण जमाये, वैसे ही फ्रांसिसकन (Frarlist-scan), डोमिनिकन (Dominican), जैसूट (Jesuity) तथा अन्य रोमन कैथोलिक सम्प्रदायों ने भारत में प्रचार कार्य आरम्भ किया तथा आदिवासियों के मध्य उनके धर्म तथा शिक्षा प्रसार का कार्य आरम्भ कर दिया । इस सम्प्रदायों द्वारा अग्र चार प्रकार की संस्थाएं चलायी गयी है--

1. चर्च तथा मिशनरी संस्थानों से लगे पुर्तगाली तथा लैटिन भाषा के प्राथमिक विद्यालय,

2. भारत के अनाथ बालकों के लिए पारम्परिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक तथा कृषि शिक्षा के विद्यालय,

3. उच्च अध्ययन के लिए जैसूट (Jesuit) कॉलेज,

4. पादरी तथा मिशनरों कार्य हेतु थियोलॉजीकल ट्रेनिंग सेन्टर ।

भारत में पहला पादरी सेन्ट जेवियर (ST. Francis Xavier) था, जिसने शिक्षा तथा धर्म, दोनों के प्रचार तथा प्रसार का बीड़ा उठाया । जीसस (Jesus) समाज की स्थापना में सेन्ट सेन्ट इगनिसियस लोयोल (ST. Ignatius Loyola) के साथ काम कर रहे थे । ये एक हाथ में घंटो और एक होथ में पुस्तक लेकर गाँव-गाँव घूमते थे। इन्होंने अपने ब्रदर मसीला (Mansila) को प्रत्येक गाँव में स्कूल निर्देश दिया, जिससे बालक रोजाना विद्यालय जा सकें । सन् 1555 ई० में सेन्ट एन (St. Aunc) कॉलेज की स्थापना बांद्रा (बम्बई) में की गयी 1580 में चोल (Chaul) गोवा में जैसूट (Jesuit) कॉलेज
खोला गया।

राबर्ट नॉबुली (Robert Nobel) ने मदुरा (मद्रास) में 1605-1656 में काम किया । यह इतना चालाक था कि यह ब्राह्मण से लेकर शूद्र तक के पास गया। इसने स्वयं को पश्चिमी दुनिया का ब्राह्मण घोषित किया एवं बताया कि वह खोया हुआ वेद (Veda) साथ लाया है। इस वेद (बाईबिल) को उसने यीशु वेद कहा । वह भगवे वस्त्र पहनता था और भारतीय संन्यासियों की तरह रहता था इसने धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया आरम्भ की।
जिस प्रकार दक्षिण भारत में पुर्तगाली आये, उसी प्रकार डच (The Dutch) लोग बंगाल में धर्म परिवर्तन और शिक्षा प्रसार का कार्य कर रहे थे। माहे (Mahe) यमन, चन्द्रनगर कारकिल तथा पाडिचेरी में फ्रांसीसी लोगों ने विद्यालयों की । स्थापना की जिनमें फ्रेंच भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों को भी पढ़ाया जाता था। तंजौर तथा श्रीरामपुर ने डेन्स (The Danes) लोगों ने कम्पनी बनायी और व्यापार के साथ साथ धर्म तथा शिक्षा का प्रसार अंग्रेजों के साथ मिलकर किया ।सन् 1719 ई० में डेन्स लोगों ने क्रिश्चियन मिशन कमेटी बनाकर इस कार्य को आगे बढ़ाया।

भारत मे डच, डेन, फ्रांसीसी, पुर्तगाली तथा अंग्रेज मिशनरी बड़ी तेजी से धर्म का प्रसार कर रहे थे। शिक्षा को इन्होंने धर्म प्रचार का सशक्त माध्यम बनाया और जगह-जगह मिशन स्कूलों की स्थापना की। कैरें, वार्ड तथा मार्शमैन (Carey, Ward and Marshman) नामक पादरियों की हिम्मत तो इतनी बढ़ गयी थी कि इन्होंने हिन्दु-मुसलमानों के नाम पैगाम (Addresses to Hindus and Muslims) नामक पुस्तक लिखी, जिसमें हजरत पैगम्बर साहब तथा हिन्दू देवी-देवताओं के विषय में अनर्गल बातें लिखों। इससे हिन्दू और मुसलमान, दोनों भड़क गये। नतीजतन तत्कालीन अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड मिन्टो (Lord Minto) ने तीनों पादरियों को गिरफ्तार कर जेल भिजवा दिया तथा मिशनरियों के धर्म प्रचार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। मिशनरियों ने चार्ल्स ग्रांट (Charles Grant) के नेतृत्व में इंग्लैण्ड में आंदोलन किया तथा भारत में धर्म प्रचार एवं शिक्षा प्रसार के लिए इंग्लैंड की सरकार से अनुमति ग्रहण कर ली ।

भारत में अनेक विदेशी कम्पनियों द्वारा व्यापार करने के साथ-साथ शिक्षा का भी विकास होने लगा। शिक्षा के विकास में विभिन्न यूरोपीय देशों-ब्रिटिश, डच, डेन, फ्रांसीसी, पुर्तगाल आदि के ईसाई धर्म प्रचारकों ने ईसाई धर्म के प्रचार हेतु चर्च को स्थापना को तथा शिक्षा के प्रसार के लिए विद्यालयों की स्थापना की। गोवा, दमन, ड्यू. हुगली, चटगाँव में इन कम्पनियों द्वारा प्राथमिक विद्यालय खोले गये । इनमें पुर्तगाली भाषा, गणित, रोमन कैथोलिक धर्म, कृषि तथा कारीगरी की शिक्षा दो जाती थो। गोंवा में पुर्तगालियों ने एक ग्रेजुएट कॉलेज भी खोला । इसके साथ-साथ गोवा तथा आगरा में भी कॉलेज खोले गये । फ्रांसिसियों ने पांडिचेरी, मंडी, यनाम, कालीकट तथा चन्द्रनगर में विद्यालयों की स्थापना की। डनों (डेनमार्क) ने तंजौर तथा श्रीरामपुर में अनेक विद्यालयों की स्थापना की। 1716 ई० में ट्रावनकोर में एक शिक्षक प्रशिक्षक विद्यालय भी खोला गया। इन्होंने तामिरल की भाषा का व्याकरण तैयार किया तथा बाइबिल का तमिल भाषा में अनुवाद किया।

यूरोप से आयी कम्पनियों में ब्रिटेन की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। यह ब्रिटेन की सरकार पर निर्भर नहीं थी। इस कम्पनी की परम्परा के अनुसार ब्रिटेन से आने वाले प्रत्येक व्यापारिक जहाज में ईसाई पादरी धर्म प्रचार के लिए आने लगे।

6.3 ईस्ट इण्डिया कम्पनी और चार्टर ऐक्ट (East India Company & Charter Act) :

भारत में व्यापार करने के लिए कुछ अंग्रेज व्यापारियों ने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का निर्माण सन् 1599 में किया। 1600 ई० में तत्कालीन महारानी एलिजावेथ से पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने को स्वीकृति लेकर इस कम्पनी ने 1611 ई० में मछलीपट्टम में व्यापार केन्द्र स्थापित किया। कम्पनी का व्यापार चमक उठा और उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो गयी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापार के साथ-साथ धर्म प्रचार को भी अपना उद्देश्य बनाया था। धर्म प्रचार तथा शिक्षा प्रसार के लिए सन् 1614 ई० में कम्पनी ने भारतीयों को धर्म का प्रशिक्षण लेने इंग्लैण्ड भेजा तथा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पादरियों के प्रशिक्षण हेतु अरबी भाषा का विभाग खोला गया।

सन् 1673 में प्रिंगल ने मद्रास में माध्यमिक स्कूल खोला। इसमें कम्पनी के कर्मचारियों के बच्चे पढ़ते थे। प्रत्येक छावनी तथा किले में विद्यालय चलाने की आज्ञा भी कम्पनी ने दो। 1698 ई० के आज्ञापत्र के अनुसार 1715-1731 में मद्रास, बम्बई तथा कलकत्ता में विद्यालय खोले गये। तंजौर तथा कानपुर में दानाश्रित विद्यालय चलाये गये । इनमें प्रोटेस्टेंट धर्म के अनुयायियों को प्राथमिकता दी जाती कम्पनी ने आरम्भ में अपने उद्देश्य इस प्रकार निर्धारित किये--

1 .रोमन कैथोलिक ईसाइयों के प्रभाव को समाप्त करना ।

2, धार्मिक शिक्षा के माध्यम से कंपनी के कर्मचारियों की आध्यात्मिक उन्नति करना ।

3. भारत में निवासियों को ईसाई बनाना ।

कम्पनी शासन में शिक्षा प्रसार के कुछ कारण इस प्रकार थे--

1. कम्पनी को शिक्षा नीति(1765-1813) प्लासी (1737 ई०) तथा बक्सर (1765 ई०) के युद्ध में विजय प्राप्त होने के बाद कंपनी की महत्वाकांक्षा बढ़ी। वह साम्राज्य की स्थापना के स्वरूप को पूरा करने के लिए तुष्टिकरण के सिद्धान्त का पालन करने लगी। शिक्षा के मामले में उसने धार्मिक तटस्थता की नीति को अपनाकर विद्यालयों की सहायता देनी बन्द कर दो।

2. तुष्टिकरण-वारेन हेस्टिंग्स (1791 ई०) ने मुसलमानों को खुश करने के लिए कलकत्ता मदरसा खोला। इसमें अरबी भाषा के माध्यम से कुरान, कानून गणित, तर्क तथा व्याकरण आदि पढ़ाये जाते थे। जोनाथन डंकन (1791 ई०) ने बनारस में बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना की। लार्ड वेलेजली (1800 ई०) ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।

3. शिक्षा के व्यक्तिगत प्रयन्त-श्रीमती कैम्प बैल (1786) ने मद्रास में बालिका अनाथालय खोला। डॉ० इन्ड्यूरबैल (1781 ई०) ने एक अनाथ आश्रम खोला। 1788 ई० ब्राठन ने हिन्दुओं के लिए अंग्रेजी शिक्षा के लिए विद्यालय खोला ।श्रीमती पिट,पलायन,कॉपलैण्ड आदि ने भी अनेक विद्यालय खुलवाये ।

3. शिक्षा के व्यक्तिगत प्रयन्त-श्रीमती कैम्प बैल (1786) ने मद्रास में बालिका अनाथालय खोला।

4. मिशनरी प्रयास-एंग्लिकन मिशनरियों ने कलकत्ता में दानाश्रित स्कूल चलाया एक फ्री स्कूल भी खोला गया। बैपटिस्ट मिशन ने भी शिक्षा के प्रसार में प्रशंसनीय कार्य किये। श्रीरामपुर (1800) में एक प्रेस भी लगाया गया जिसमें पुस्तकें छापी जाने लगीं । इन्होंने धार्मिक उन्माद में हिन्दू मुसलमानों के धर्म तथा धार्मिक पुरुषों को

गालियां देना आराम कर दी। परिणामतः ल्ाड मिन्टो ने यह प्रेस जब्त कर लिया। इतने पर भी मिशनरी अपना कार्य करते रहे।

5. ब्रिटिश संसद की भूमिका-चार्ल्स ग्रांट (1767-1780) भारत में कम्पनी शासन में रहा। इसके बाद वह कम्पनी का चेयरमैन (1805) तथा ब्रिटिश संसद का सदस्य हुआ। इसने हिन्दुओं की अज्ञानता का प्रचार किया तथा शिक्षा के लिए बल दिया। इसने भारतीयों को पाश्चात्य शिक्षा दिये जाने पर जोर दिया।

6. सन् 1793 का आज्ञापत्र (Charter of 1793)-ग्रांट के विचारों से प्रभावित होकर कम्पनी के आज्ञापत्र में विलियम विल्वर फोर्स ने यह संशोधन रखा- 'ब्रिटिश सभा का यह विशेष तथा अनिवार्य कर्तव्य है कि वह समस्त उचित बुद्धिमत्तापूर्ण साधनों द्वारा भारत में अंग्रेजी राज्य के हित एवं समृद्धि के लिए कार्य करे और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ऐसे साधनों को अपनाये जिससे भारतीयों के ज्ञान, धर्म तथा नैतिकता का स्तर ऊंचा उठे।" इस प्रस्ताव के विरोध में शार्प ने कहा- 'हिन्दुओं की धार्मिकता तथा नैतिकता उतनी ही उत्तम है जिनती अन्य व्यक्तियों की और उनके धर्म परिवर्तन का प्रयास करना अथवा अधिक ज्ञान देना पागलपन होगा।

7. सन् 1813 का आज्ञापत्र (Charter of 1813) -- सन् 1793 के शिक्षा प्रस्ताव को स्वीकार करने के बाद भी ईसाई पादरियों ने अपना कार्य जारी रखा। 1813 ई० में कम्पनी के आज्ञापत्र का नवीनीकरण होना था । इस समय एक प्रस्ताव रखा गया, भारत में दिनोदिन शिक्षा को अवनति हो रही है, अत: कम्पनी की सरकार को भारत के लोगों को शिक्षा का उत्तरदाग्वि लेना चाहिए और इस कार्य के लिए धन खर्च करना चाहिए। यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। लार्ड मिन्टो ने दस हजार पौंड प्रति वर्ष शिक्षा के लिए व्यय करने हेतु अनुदान की व्यवस्था की। यह आज्ञापत्र भारतीय शिक्षा के इतिहास की अद्विती कड़ी है। नुरूल्ला एवं नायक के अनुसार- 'इस प्रकार इस आज्ञापत्र ने भारत में अंग्रेजी की शिक्षा नीति का शिलान्यास किया। इस आज्ञापत्र से भारत की आधुनिक शिक्षा के इतिहास में प्रथम काल समाप्त होकर उसको नया मोड़ मिलता है।

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का ध्यान सन् 1765 से पूर्व व्यापार विकास तथा धर्म प्रसार पर था। इस समय कंपनी ने अपने कर्मचारियों के लिए विद्यालय खोले थे। इनमें सामान्य शिक्षा के साथ साथ धर्म की शिक्षा भी दी जाती थी। 1781 ई० प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिग्स (Waren Hastings) के व्यक्तिगत प्रयासों से कलकत्ता में 7 वर्षीय शिक्षा के लिए कलकत्ता मदरसा की स्थापना की । इसमें दर्शन, व्याकरण, अंकगणित, तर्कशास्त्र, नक्षत्र विद्या, मुस्लिम कानून और धार्मिक सिद्धान्त की शिक्षा दी जाती थी।

कलकत्ता मदरसा स्थापित करने के मूल में वारेन हेस्टिंग्स द्वारा मुसलमानों की कृपा प्राप्त करने की भावना थी । आरम्भ में मदरसे में 40 विद्यार्थी थे ।

जोनाथन डंकन (Jonathan Duncan) के अनुसार, इस विद्यालय की स्थापना के प्रमुख दो उद्देश्य हैं-(1)हिन्दू हमसे प्रेम करने लगेंगे। (2) हिन्दू परम्पराओं की रक्षा हो सकेगी तथा न्यायधीशों को सहायक मिलते रहेंगे।

बनारस के रेजीडेंट जोनाथन इंकन (Jonathan Duncan) के प्रयासों से 1791 में बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना हुई इसमें धर्म, दर्शन, न्याय, कानून, गणित, इतिहास, तर्कशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाति थी।इन संस्थाओं के आरम्भ करने की मंशा यह थी कि स्थानीय लोगों में किसी प्रकार का विरोध उत्पन्न न हो और अंग्रेजी शासन के लिए पढ़े-लिखे लोग कार्य करने हेतु मिल सकें।

सन् 1800 में लार्ड वेलेजली ने फोर्ट विलियम कॉलेज खोला। इसमें ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, गिल क्राईस्ट, डॉ० करें, कोलब्रुक आदि विद्वान पढ़ाते थे।

इस युग में शिक्षा के विकास के लिए व्यक्तिगत प्रयास किये गये । ये प्रयास व्यक्तिगत तथा मिशनरी स्तर पर किये गये । केरे, लार्ड तथा मार्शमैन ने श्रीरामपुर में विद्यालय खोले, श्रीमती कैम्पवैल (1787 ई०) तथा एन्ड्बैल (Andrew Bell) ने विद्यालय तथा आश्रम की स्थापना की।

6.4 प्राच्य-पाश्चात्य विवाद एवं मैकाले (Oriental-occidental Controversy and Macaulay):

भारत में ब्रिटिश युग में शिक्षा व्यक्तिगत आधार पर विकसित थी। बंगाल में ही एक लाख पाठशालायें चल रही थीं। इतना होने पर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में आये ईसाई धर्म प्रचारकों ने अपने ढंग से शिक्षा का प्रसार किया । धीरे-धीरे ये प्रयास औपचारिक विद्यालयों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में परिवर्तित होते गये। इस समय एक विवाद यह था कि भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा दो जाये अथवा भारतीय भाषाओं तथा विषयों को। यह विवाद ही प्राची-प्रतीची विवाद कहलाता है।

सन् 1813 के आजा पत्र के अनुसार शिक्षा का प्रबन्ध राज्य का कर्तव्य हो गया था । इसलिए इस आज्ञापत्र में दस हजार पौड (उस समय के एक लाख रुपये) की व्यवस्था की गयो थो । परन्तु विवरण के अभाव में यह धनशि दस वर्ष तक व्यय नहीं की जा सकी। 1833 ई० तक कम्पनी की ओर से शिक्षा के प्रति उदासीनता बरती गयो। बीस वर्ष का यह समय अनिश्चय का काल था। इस काल में यह विवाद प्रमुख था की शिक्षा प्राची (East) के अनुसार दो जाये या प्रतीची (West) के अनुसार।

1831 में जनरल कमेटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन का गठन किया। इस कमेटी ने उपयोगी ज्ञान पर बल दिया ।इस समितिके सामने समस्या थी कि शिक्षा के उद्देश्य, लक्ष्य, माध्यम तथा साधन क्या हो? इन समस्याओं को लेकर शिक्षा के क्षेत्र में तीन वर्ग बन गया-1 (1) एक वर्ग प्राच्य-शिक्षावादियों का था जो भारतीय तथा अन्य विद्याओं को संस्कृत, अरबी तथा फारसी के माध्यम से पढ़ाना चाहता था। यह वर्ग तुष्टिकरण की नीति का समर्थक था। (2) दूसरा वर्ग अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा देना चाहता था। चार्ल्स वुंट तथा राजा राममोहन राय आदि इस विचारधारा के समर्थक थे (3) तीसरा समूह लोक-भाषावादियों का था। वह वर्ग प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहता था। ये तीनों वर्ग कम्पनो के अधिकारियों के ही थे।

यह विवाद तथा अस्पष्टता का युग था। कम्पनी शिक्षा के दायित्य को टालना नहीं चाहती थी। इस विवाद का परिणाम यह हुआ कि 1813 ई० के आज्ञापत्र पर कार्यवाही न हो सकी। 1814 ई० में कम्पनी के संचालक ने शिक्षा-नीति सम्बन्धी स्पष्ट आदेश दिया। इसमें आर्थिक सहायता सम्मान सूचक उपाधियां का वितरण , प्राचीन साहित्य के संरक्षण तथा हिन्दू शिक्षा प्रणाली को स्वीकार करने पर बल दिया गया । यह आदेश तथा आज्ञापत्र को धारा 43 निष्क्रिय एवं निराशाजनक रहे।

1813 ई० में घोषणा पत्र की धारा 43 को लेकर भारतीयों एवं अंग्रेजों में प्राच्य (Oriental) तथा पाश्चात्य (Occidental) विचारधारा पंनपी और शिक्षा किस प्रकार दी जाये, इस बात पर संघर्ष हो गया। इस धारा में साहित्य तथा भारतीय विद्वान दो ऐसे शब्द थे, जिनको लेकर विवाद हुआ। प्राच्यवादी साहित्य के अन्तर्गत संस्कृत तथा अरबी साहित्य और विद्वान का अर्थ उपरोक्त भाषाओं में भारतीय विद्वान पाश्चात्यवादी अंग्रेजी साहित्य तथा अंग्रेजी के विद्वानों को इस श्रेणी में रखती थी।

कम्पनी के कानूनी सलाहकार लार्ड मैकाले को साहित्य तथा भारतीय विद्वान का अर्थ स्पष्ट करने को कहा गया। उसने अंग्रेजी का पक्ष लिया था अंग्रेजी की उपयोगिता पर ठप्पा लगा दिया।

सन् 1832 तक आज्ञापत्र की पोषणा कम्पनी की फाइलों में पड़ी रही। कम्पनी विशुद्ध रूप में

व्यापारिक कार्य करने पर बल देना चाहती थी । 1813-23 का युग वारेन हेस्टिंग्स का युग था। इस युग में गुखों, पिडारों, मराठों तथा पठानों से कम्पनी को लड़ाइयाँ हुई और कम्पनी शासन को दृढ़ करती रही। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा प्रसार के लिए उसके प्रयत्न शिथिल रहे।

सन् 1824 ई० तक भारत में कंपनी शासकों में राजनीतिक चेतना आ चुकी थी। ब्रिटिश सरकार ने गवर्नर जनरल (1824) को एक आदेश भेजा भारतवासियों की शिक्षा व्यवस्था की उन्नति तथा सुधार के लिए हमलोग पूर्णरूप से उत्सुक हैं, हमारा यह उत्साह आपलोगों को भली-भात विदित होना चाहिए । हमें उचित साधनों का निर्देश दिया जाये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बृहत् बलिदान करने को प्रस्तुत है, जन शिक्षा समिति (1823) ने ये कार्य किये

(1) कलकत्ता मदरसा तथा बनारस संस्कृत कॉलेज का पुनर्गठन ।
(2) कलकत्ता , आगरा, दिल्ली तथा मुर्शिदाबाद में प्राच्य विद्या कॉलेज की स्थापना

(3) कलकत्ता शिक्षा प्रेस की स्थापना ।

(4) यूरोपीय ग्रंथों का अनुवाद ।

समिति को इस नीति का विरोध भारतीयों ने शार्प (Sharp) के शब्दों में इस प्रकार किया 'कम्पनी की सरकार हमें केवल प्राच्य ज्ञान को शिक्षा देकर कुपमंडुक बनाये रखना चाहती है, अतः हम इसका विरोध करते हैं। सरकार को चाहिए कि वह कलकत्ता में संस्कृत कॉलेज में निर्माण का विचार त्याग दें तथा उसके स्थान पर एक अधिक उदार तथा बुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहित करें, जिसमें गणित, प्राकृतिक दर्शन, जीव विज्ञान, रसायन तथा अन्य उपयोगी विज्ञान सम्मिलित हों। इसका परिणाम यह हुआ कि कलकत्ता, बनारस, आगरा आदि में अंग्रेजी के शिक्षण के व्यवस्था की गयी।

बम्बई में 1719 में एलफिंस्टन ने शिक्षा प्रसार के लिए कुछ धन का भाग व्यय किया तथा पूना संस्कृत कॉलेज की स्थापना की थी। इसमें जन शिक्षा प्रसार की योजना बनायी । परन्तु वार्डन (Wardcn) जॉ समिति का सदस्य था, ने इस योजना का विरोध किया और अधोगामी निस्पन्दन सिद्धान्त (Downward Filtration of Education) का समर्थन करते हुए कहा- 'शिक्षा ऊपर से छन छन कर जन साधारण में पहुँचती थी। भारतीय जीवन के हिमालय के लाभदायक शिक्षा बूंद बूंद करके नीचे कां वहे जिससे वह कुछ समय में एक विशाल धारा के रूप में परिवर्तित होकर शुष्क मैदानों का सिंचन करे ।' कम्पनी ने इस नीति का अनुसरण किया और एलफिस्टन के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इससे निराश होकर एल्फिस्टन 1829 में इंग्लैंड वापस चले गये। मद्रास में मुनरो गवर्नर थे। उन्होंने सरकार द्वारा जनशिक्षा की अवहेलना को अनुभूति की तथा हर तहसील में वर्नाक्यूलर स्कूल खोलने पर बल दिया। परन्तु मुनरों अपने उद्देश्य सफल न हो सका।

ईसाई मिशनरियों ने बंगाल, बम्बई, मद्रास, आगरा, मेरठ,बनारस, जौनपुर, लुधियाना, वर्दवान, अजमेर आदि में ईसाई धर्म के प्रचार केन्द्रों के साथ विद्धालय खोले,जिनमें बाइबिल के साथ-साथ प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। राजा राममोहन राय, डेविड हेयर, एडवर्ड हाइड ईस्ट, राधाकांत देव उनमें से थे जिन्होंने व्यक्तिगत प्रयासों से शिक्षा प्रसार का कार्य किया ।

सन् 1833 में कम्पनी के आज्ञा पत्र पर विचार हुआ। कम्पनी के अधिकारियों के शैक्षिक कार्यों से ब्रिटिश सरकार संतुष्ट नहीं थी। अत: नये आज्ञापत्र (1833) में मिशनरियों को सुविधा, दस लाख रुपये का बार्षिक अनुदान, सरकारी नीति का आधार, गवर्नर जनरल के अधिकार तथा कानून सदस्य को नियुक्ति आदि की गयी। इस आज्ञापत्र के अनुसार भारतीयों में शिक्षा विकास की सम्भावनायें बढ़ी और लार्ड मैकाले (Lord Macaulay) भारत में कम्पनी का कानून-सदस्य (Member of Law) बनकर आया।